संस्थापित १८९७

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२४ ● अंक-०३ ● २१ जनवरी २०२० माघ कृष्ण पक्ष द्वादशी संवत् २०७६ ● दयानन्दाब्द १९५ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२०

ज्ञान-आलोक (सिद्धि प्राप्त करो)

सुपयोऽसि गरूत्मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद,
भासान्तरिक्षमापृण, ज्योतिषा दिवमुत्मान तेजसा दिश उद्दहं। यजुर्वेद १७/७२

हे जीव! आप (मासा) प्रकाश से (सुपर्णः) अच्छे–अच्छे पूर्ण सब लक्षणों से युक्त और (गुरूत्मान) बड़े मन तथा आत्मा के बल से युक्त (असि) है, अति प्रकाश मान आकाश में वर्तमान सूर्यमण्डल के तुल्य (पृथिव्याः) पृथ्वी के, (पृष्ठे) ऊपर (सीद) स्थिर हो वा वायु के तुल्य प्रजा को (आपृण) सुख दे वा जैसे सूर्य (जयोतिषा) अपने प्रकाश में (दिवम्) प्रकाश मय (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष को वैसे तूँ राजनीति के प्रकाश से राज्य को (उत्स्तमान) उन्नति पहुँचा अथवा आप अपने (तेजसा) अति तीक्ष्ण तेज से (दिशः) दिशाओं को वैसे अपने तीक्ष्ण तेज से प्रजाजनों को (उद्देश्य) उन्नति दें।।

हे जीव! तुम ज्ञान और कर्मरूप दो पंखों द्वारा उड़ने वाले महान् चरिमा से युक्त एक सुन्दर गुरूड़ पक्षी की तरह हो। तुम इस पृथिवी पर अपने शोभन कार्मों से प्रतिष्ठित हो, अपनी यश रूपी चमक से आकाश को भर दो, अपनी ज्ञानज्योति से द्युलोक को और भी प्रकाशित कर दो और अपने तेज तथा प्रभाव से दिग्दिग्न्तरों को उन्नत बनाओ।

जब मनुष्य राग अर्थात् प्रीति और द्वेष से (बैर से) रहित होकर ईश्वर के समान सब प्राणियों के साथ बर्ते तब–सब सिद्ध को प्राप्त होवे।

संस्थापित 1886 ई0
पंजीकरण तिथि 5 जनवरी, 1897

ओ३म्

✆: 0522-2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

श्री नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ-226001
ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com

पत्रांक : 2242-2250 दिनांक : 15-1-2020

आदेश

संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक 15.12.2019 के निर्णयानुसार प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ की निम्नवत् कार्यकारिणी गठित की जाती है:-

क0सं0	नाम	पद नाम
1	डॉ0 आर0आर0 चतुर्वेदी, लखनऊ	प्रधान
2	डॉ0 जयप्रकाश भारती, गाजीपुर	मन्त्री
3	संजय तिवारी, बलरामपुर	कार्यकारी मन्त्री
4	अभिमन्यु कुमार, अम्बेडकरनगर	उपमन्त्री
5	डॉ0 सर्वेश कुमार आर्य, औरैया	सदस्य
6	संतोष आर्य, आजमगढ़	सदस्य
7	विजय प्रताप पटेल, कुशीनगर	सदस्य
8	ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, गाजियाबाद	पदेन सदस्य
9	अरविन्द कुमार, मुजफ्फरनगर	पदेन सदस्य

उपरोक्त नवनियुक्त प्रदेशीय विद्यार्य सभा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से अपेक्षा है, कि वे नियमावनुसार प्रदेशीय विद्यार्य सभा के कार्यो का निष्पादन करेंगे।

(डॉ0 धीरज सिंह आर्य)
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

संख्या एवं दिनांक तदैव।

प्रतिलिपि उपरोक्त समस्त पदाधिकारियों/सदस्यों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

(डॉ0 धीरज सिंह आर्य)
प्रधान

आवश्यक सूचना

संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ की पंजीकृत नियमावली के नियम ५ (ए) के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के पदाधिकारियों की बैठक दिनांक १६.०१.२०२० को बैठक सम्पादित हुई। उक्त बैठक के निर्णयानुसार संस्था अन्तरंग सभा का नैमित्तिक साधारण अधिवेशन दिनांक ०२.०२.२०२० दिन रविवार तद्नु माघ शुक्ल अष्टमी को पूर्वाह्न ११.०० बजे से संस्था कार्यालय नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगी, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार एवं निर्णय लिये जायेंगे। आपकी उपस्थिति अतिआवश्यक एवं प्रार्थनीय है। ऐजेण्डा प्रेषित किया जा चुका है।

डॉ0 धीरज सिंह
प्रधान

ज्ञानेन्द्र सिंह
मंत्री

सम्पादकीय.....

सांस्कृतिक चेतना

भारत के दार्शनिक और व्यवहारिक पक्ष सारे विश्व के लिए प्रेरणाश्रोत रहे हैं सारे संसार का गुरू भारत था भारत की इस महानता के कारण सारे विश्व में कोई मत मजहब नहीं ाि और सबके अन्दर जिज्ञासा सबके मन अच्छे विचारों पर टिके हुए थे। किन्तु आज सांस्कृतिक विलुप्तता के कारण उच्चता का स्थान समाप्त हो रहा। यह सांस्कृतिक पतन समाज के अनेक रूपों में देखी जा रही है।

१. अपने मूल धार्मिक वेद, दर्शन, उपनिषद आदि से हटकर अन्ध ग्रन्थों को अपना रहे।

२. मूल धार्मिक गन्थों को पढ़ने–पढ़ाने में रूचि का अभाव होता जा रहा है।

३. जिज्ञासु भाव (वास्तविक ज्ञान को जानने) की दृष्टि से हटकर नवनी कपोल कल्पित विचार धाराओं में सक्रियता बढ़ रही है।

४. वैदिक आदर्शों पर विश्वास न करना धर्म की वैज्ञानिकता पर आरूढ़ न रहकर अवैज्ञानिक मनगढ़न्त संस्कृति और विचारों में बहना।

५. भारतीय संस्कृति का न समझने के कारण उसके विस्तार में रूचि न लेना।

६. कुछ निहित स्वार्थों ने लोगों को गलत मान्यताओं और आचरणों को समाज में प्रचारित करके सत्यासत्य को न समझे अथवा सत्य को न जानने की चेष्ठा धर्म के मूल ग्रन्थों को अनास्था एवं अश्रद्धा का भाव प्रकट करने में लग गये।

७. भौतिक चेतना का ह्रास, विवेक पूर्ण पर्चालोचन का अभाव और सत्य निर्धारण शक्ति की न्यूनता, प्राच्य साहित्य विदों का मत मन में धारण करने से यह दृष्टिकोण बदला हुआ नज़र आ रहा है।

८. शास्त्र में सांकेतिक और परिभासिक शब्दों और प्रकरणों को बिना विचारे तोड़ मरोड़ कर उनकी व्याख्या करना।

ऋषियों का मत है कि शास्त्रों का अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोण से करके विभिन्न दृष्टिकोण परिपुष्टि विचार ही वास्तव में श्रद्धा है। इसीलिए मनीषियों ने वेद की बात समझने और समझाने के लिए शब्दार्थ प्रणाली व शब्द रचना (व्याकरण और निरूक्ति), दर्शन (तर्क, पुष्टि), ब्राह्मण ग्रन्थ (मनन और कर्मकाण्ड पद्वति) तथा पुराण (ऐतिहासिक) उदाहरणों और आचरणों समस्त विधर्मियों का आश्रय लिया था। जिससे दार्शनिक रूप और व्यवहारिक रूप से हर बात को समझ और समझा सकें।

यह बात तो सर्वथा निश्चित है कि सत्य का निर्णय वा सत्य की पहुंच हमेशा कए शास्त्रीय विचार है। इतिहास उसकी व्यवहारिकता की ही पुष्टि कर सकता है। किन्तु किसी सिद्धान्त का सत्यासत्य का निर्णय नहीं कर सकता है।

ऋषियों द्वारा या ईश्वरकृत ग्रन्थों में सांस्कृतिकता उच्चता है और मनुष्य कृत मत और ग्रन्थों में सांस्कृतिक हीनता एवं गरीबी है हम सभी को चाहिए कि हम सभी सांस्कृतिक हीनता, क्षीणता को अवश्य दूर करे। जो भारतीयों के ह्रदय में सांस्कृति क्षीणता के भाव दूर हो जायेगें। तो हमारा भारत विश्व गुरू फिर कहलायेगा ।

–सम्पादक

गतांक से आगे .....

उत्तरार्द्ध

अथैकादशसमुल्लासारम्भः

अथाऽऽर्य्यावर्त्तीयमतखण्डनमण्डने विधास्यामः

(सिद्धान्ती) अच्छा तो वसिष्ठ, शंकराचार्य और निश्चलदास के पक्ष का हमारे सामने स्थापन करो, हम खण्डन करते हैं, जिसका पक्ष सिद्ध हो वही बड़ा है। जो उनकी और तुम्हारी बात अखण्डनीय होती है तो तुम उनकी युक्तियां लेकर हमारी बात का खण्डन क्यों न कर सकते? तब तुम्हारी और उनकी बात माननीय होवे। अनुमान है कि शंकराचार्य आदि ने तो जैनियों के मत के खण्डन करने ही के लिए यह मत स्वीकार किया हो क्योंकि देश काल के अनुकूल अपने पक्ष को सिद्ध करने के लिए बहुत से स्वार्थी विद्वान् अपने आत्मा के ज्ञान स विरूद्ध भी कर लेते हैं। और जो इन बातों को अर्थात् जीव ईश्वर की एकता, जगत् मिथ्या आदि व्यवहार सच्चा मानते थे तो उनकी बात सच्ची नही हो सकती।

और निश्चलदास का पाण्डित्य देखो ऐसा है 'जिवो ब्रह्माऽभिन्नश्चेतनत्वात्' उन्होंने 'वृत्तिप्रभाकर' में जीव ब्रह्म की एकता के लिये अनुमान लिखा है कि चेतन होने से जीव ब्रह्म से अभिन्न है। यह बहुत कम समझ पुरूष की बात के सदृश बात है। क्योंकि साधर्म्यमात्र से एक दूसरे के साथ एकता नहीं होती, वैधर्म्य भेदक होता हैं। जैसे कोई कहे कि 'पृथिवी जलाऽभिन्नता जडत्वात्' जड़ के होने से पृथिवी जल से अभिन्न है। जैसा यह वाक्य संगत कभी नहीं हो सकता वैसे निश्चलदास जी का भी लक्षण व्यर्थ है। क्योंकि जो अल्प, अल्पज्ञता और भ्रान्तिमत्तदि धर्म जीव में ब्रह्म से और सर्वगत सर्वज्ञता और निर्भ्रान्तित्वादि वैधर्म्य ब्रह्म में जीव से विरूद्ध है इससे ब्रह्म और जीव भिन्न–भिन्न हैं। जैसे गन्धवत्त्व कठिनत्व आदि भूमि के धर्म, रसवत्त्व द्रवत्वादि जल के धर्म से विरूद्ध होने से पृथिवी और जल एक नहीं हैं। वैसे जीव और ब्रह्म के वैधर्म्य होने से जीव और ब्रह्म एक न कभी थे, न हैं न कभी होंगे।

इतने ही से निश्चलदासादि को समझ लीजिये कि उनमें कितना पाण्डित्य था और जिसने योगवासिष्ठ बनाया है वह कोई आधुनिक वेदान्ती था। न वाल्मीकि, वसिष्ठ और रामचन्द्र का बनाया वा कहा सुना है। क्योंकि वे सब वेदानुयायी थे वेद से विरूद्ध न बना सकते और न कह सुन सकते थे।

प्रश्न– क्या व्यास जी ने जो शारीरिक सूत्र बनाये हैं उनमें भी जीव ब्रह्म की एकता दीखती है? देखो–

सम्पद्याऽऽविर्भावः स्वेन शब्दात्।।१।।

ब्राह्मेण जैमिनिरुपन्यासादिभ्यः।।२।।

चिति तन्मात्रेण तदात्मत्वादित्यौडुलोमिः।।३।।

एवमप्युपन्यासात् पूर्वभावादविरोधं बादरायणः।।४।।

अतएव चानन्याधिपतिः।।५।।

अर्थात् जीव अपने स्वरूप को प्राप्त होकर प्रकट होता है जो कि पूर्व ब्रह्मस्वरूप था क्योंकि स्व शब्द से अपने ब्रह्मस्वरूप का ग्रहण होता है।।१।।

'अयमात्मा अपहतपाप्मा' इत्यादि उपन्यास ऐश्वर्य प्राप्ति पर्य्यन्त हेतुओं से ब्रह्मस्वरूप से जीव स्थित होता है ऐसे जैमिनि आचार्य्य का मत है।।२।।

और औडुलोमि आचार्य्य तदात्मकस्वरूप रूपिणादि बृहदारण्यक के हेतुरूप होने में अविरोध मानते हैं।।४।।

योगी ऐश्वर्यसहित अपने ब्रह्मस्वरूप को प्राप्त होकर अन्य अधिपति से रहित अर्थात् स्वयम् आप अपना और सबका अधिपतिरूप ब्रह्मस्वरूप से मुक्ति में स्थित रहता है।।५।।

उत्तर– इन सूत्रों का अर्थ इस प्रकार का नहीं किन्तु इनका यथार्थ अर्थ यह है। सुनिये! जब तक जीव अपने स्वकीय शुद्धस्वरूप को प्राप्त, सब मलों से रहित होकरि पवित्र नहीं होता तब तक योग से ऐश्वर्य को प्राप्त होकर अपने अन्तर्यामी ब्रह्म को प्राप्त होके आनन्द में स्थित नहीं हो सकता।।१।।

इसी प्रकार जब पापादि रहित ऐश्वर्ययुक्त योगी होता है तभी ब्रह्म के साथ मुक्ति के आनन्द को भोग सकता है। ऐसा जैमिनि आचार्य का मत है।।२।।

जब अविद्यादि दोषों से दूट शुद्ध चैतन्यमात्र स्वरूप से जीव स्थिर होता है तभी 'तदात्मकत्व' अर्थात् ब्रह्मस्वरूप के साथ सम्बनध को प्राप्त होता है।।३।।

क्रमशः

हैदराबाद संग्राम की अमर कहानी

ईट के चार आर्य बलिदानी

□ स्वा. सै. (स्व.) दत्तात्रय पाटिल (दत्तू मास्तर)

वीरभूमि भारतवर्ष में जब कभी अन्याय एवं अत्याचार बढ़ा, तब अनेकों भूमिपुत्रों ने इस आँधी को जान हथेली पर लेकर रोका और क्रान्ति का सिंहनाद किया। दक्षिण भारत में हैदराबाद के शासक निजाम ने अपने मुट्ठीभर लोगों द्वारा यहां की बहुजन आर्य (हिन्दू) जाति पर क्रूरतम अत्याचार किये। लोगों का जीवन उध्वस्त कर अपना वर्चस्व बढ़ाना चाहा, तब इस भूमि में जन्में अगणित वीरों ने अपनी शूरता के जौहर दिखाये। जगह–जगह निजाम के विरूद्ध आंदोलन चले। युगपर्तक महर्षि दयानन्द के अनेकों अनुयायियों ने आर्य समाज की 'ओ३म्' पताका कन्धों पर लेकर निजाम और राजाकारों द्वारा होने वाले अत्याचारों को चुनौती दी। असंख्य आर्य नेतागण जेल गये। अनेकों ने अपने घर परिवारों को त्याग कर राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व अर्पित किया। इन्ही शहीदों की वीरमाला को महाराष्ट्र के ईट (ता. भूम जि.उस्मानाबाद) के चार आर्य बलिदानियों ने अपने पावन बलिदान से अलंकृत किया, वे हैं हुतात्मा श्री किशनराव जी टेके, हुतात्मा श्रीमती गोदावरीदेवी टेके, हु.श्री विश्वनाथ तेली तथा हु.श्री मारुती माली! इन चारों वीर शहीदों को शौर्यगाथा इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ यावत् सूर्यचन्द्र गाते रहेंगें।

तत्कालीन भयंकर स्थिति-

स्वतन्त्रता के पूर्व धाराशीव (उस्मानाबाद) जिलान्तर्गत कलम्ब एवं भूम का परिसर सामाजिक तथा धार्मिक परतन्त्रता के साथ ही आर्थिक विवंचनाओं से भी पीडित था। लोगों में शिक्षा का अभाव था क्योंकि उस समय समाज में पढ़ाई पर उतना विशेष महत्व दिया नहीं जाता था। इस कारण सर्वत्र अज्ञान एवं अन्धकार फैला हुआ था। फलस्वरूप आर्य (हिन्दू) प्रजा में संगठन की भावना नहीं थी। सभी का लगभग कृषि ही एकमात्र व्यवसाय था। जब पानी बरसे तभी खेती में उत्पन्न होता था। इस कारण आर्य हिन्दी समाज सुख, सुविधाओं से वंचित था। ऐसी बिकट आर्थिक व्यवस्था में निजाम एवं उसके अनुयासी रजाकारों ने आर्य हिन्दू जनता को लुटाना शुरू किया। सत्ता एवं अधिकार के बलपर उन्होंने समाज को त्रस्त करना आरम्भ किया।

आर्य दम्पती टेके का कार्य–

तत्कालीन विकट परिस्थिति में ईट निवासी आर्य दम्पत्ती श्री किशनराव एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गोदावरी देवी टेके ने अपने आदर्श आदर्श जीवन तथा क्रान्तिकारी कार्यों से समाज में नयी चेतना का संचार किया। प्रचंड धैर्यशक्ति एवं अनोखे साहस से जनता का नेतृत्व कर निजाम के विरूद्ध लड़ने के लिए उन्हें प्रेरित किया। श्री किशनवजी स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे। ग्राम ईट में आर्य समाज की स्थापना कर अनेकों वैदिक विद्वानों द्वारा जनता में आर्य विचारों का प्रचार करवाया। साप्ताहिक सत्संगों व विविध पर्वों में ग्रामवासी बड़े उत्साह से सम्मिलित होते थे। इसमें अनेकों के जीवन में परिवर्तन आया। इतना ही नहीं, बल्कि इस टेके दम्पती ने दलित भाइयों को पूर्ण सहयोग दिया। दुःखी पीडित जनों के आँसू पोंछें। ऐसे करूणायुक्त हृदयवत्सल आर्य दम्पती का महान् जीवन युग–युग तक आनेवाली पीढ़ी को प्रेरणा देता रहेगा।

हैदराबाद स्वतन्त्रता आन्दोलन के नेता–

श्री किशनराव एवं श्रीमती गोदावरी देवी टेके ने १९३८ में ईट परिसर के आन्दोलन का नेतृत्व किया। टेके दम्पती ने राजकारों द्वारा होने वाले अत्याचारों का डटकर मुकाबला किया। उस समय के आर्य नेता पं० गणपतरावजी कथले भी अग्रणी आर्य नेता थे। उन्होंने कलम्ब व भूम परिसर में आर्य समाज के विचारों को अहोरात्र परिश्रम से बढ़ाया। कथलेजी के सहयोगी बनकर श्री किशनराव ने भी आर्य समाज की वैदिक विचारधारा को गाँव–गाँव तक पहुँचाया। उन्होंने अन्याय एवं अत्याचारों की जंजीरों से जकडी जर्जर हिंदू जाति में प्राण फूँके और जन–समान्यों में स्वाभिमान की ज्योति जगायी। ईट, वाशी, गिरवली आदि देहाती स्थानों पर आर्य समाज की स्थापना कर जनता में शस्त्र और शास्त्र का प्रचार–प्रसार किया। साथ ही इन गांवों में रहने वाली जनता को निर्भय बनाया।

क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्थान–

किशनराव टेकेजी ने पं. गणपतरावजी कथले के साथ काम किया। टेकेजी के अथव परिश्र एवं सहयोग के कारण ही गणपतरावजी अपने पैत्रिक ग्राम कलंब को हैदराबाद संग्राम की 'बारदोली' बना सके। जब १९३७८ इसवी में हैदराबाद सत्याग्रह शुरू हुआ तब श्री किशनरावजी टेके ने अपने सुपुत्र चि. रघुनाथ टेके को बाबासाहेब पाटील (चांदवड), रामलिंग वाणी, विट्ठलराव कांबले तथा अन्य पाँच युवकों के साथ स्वतन्त्रता आन्दोलनार्थ सोलापुर भेजा। ईट इलाके के दस आर्य सेनानियों को महात्मा आनन्द स्वामी (खुशहालचन्द्र खुर्सन्द) के जथ्थे में भेजा और उन सभी ने गुलबर्गा जेल में ही शिक्षा भोगी।

हिंसा का बदला हिंसा से-

इसके पश्चात् १९४१ में आर्य समाज के आन्दोलन के तीव्र रूप धारण किया। सभी जनता को श्री टेकेजी ने ओ३म् के झण्डे तले संघटित किया। सर्वत्र आर्यमय वातावरण बन गया। अंग्रेजों से भी अधिक जुल्म निजाम तथा रजाकारों के थे। जबरन जनसमान्यों के अधिकार छिने गये। तब श्री किशनराव टेके और उनके सहयोगियों ने कडा संघर्ष किया। अतः उन्हीं के नेतृत्व में सभी जन उत्साह से कार्यरत थे। चांदवड के बाबासाहेब पाटिल, कृष्णा हरी पाटिल एवं उनके सभी सहयोगी जब जेल की सभा भेागर लौटे तब उन्होंने श्री टेके के साथ जनजागृति आन्दोलन प्रारम्भ किया। इसी दौरान कृष्णा हरि पाटील की सम्पत्ति जप्त की गयी। श्री बाबुराव पाटिल (अंजसोडा), श्री विट्ठलराव मोटे (गिरवली), श्री जनार्दनराव निमकर (अंदरूड) तथा अन्य लोग जब किशनरावजी टेके के साथ रहकर क्रान्तिकारी काम करने लगे, तब रझाकार, निजामी पुलिस, तथा उस्मानाबाद, निजामी पुलिस, तथा उस्मानाबाद के तत्कालीन जिलाधीश व पुलिस अधिकारी (डी.एस.पी.) इन सभी को यह बात रास नहीं आयी। उनके मन में द्वेष की भावना जाग उठी। इसी के परिणामस्वरूप उन निजामी दुष्टों ने श्री किशनरावजी टेके पर दिन दहाडे सशस्त्र आक्रमण किये। उस समय श्री टेकेजी के पास केवल एक लाठी थी। उसी से उन्होंने प्रतिकार किया। 'अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम्' के अनुसार सौभाग्यवश किशनराव बालबाल बच गये। सारा शरीर खून से लथपथ था। फिर भी वे घबराये नहीं। इस समय डी.एस.पी. मोमीन ईट में ही था। तब निर्भिकता की इस प्रतिमूति ने तत्क्षण प्रत्युत्तर के रूप में गर्जना की– 'आप जैसी क्रूर पुलिस ही ऐसे बदमाश गुंडों को समर्थन दे रही है और उन्हें मेरी हत्या हेतु प्रेरित कर रही है, तब हम पुलिस केस नहीं करेंगे। हम तो (जैसे को तैसा) हिंसा का बदला हिंसा से ही लेंगे।'

खर्डा कैम्प का नेतृत्व–

स्वततन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् १९४७ में निजाम ने अपने हैदराबाद प्रान्त को भारतवर्ष में विलय नहीं किया। अतः स्टैट कांग्रेस और आर्य समाज को अपना आन्दोलन अधिक तीव्र करना पड़ा। उस समय सभी आर्य युवक घाटपिंपरी के पहाड़ों में एकवित्रत हुए और संघटनशक्ति द्वारा सशस्त्र प्रतिशोध लेने का निश्चय किया। खर्डा (जि. नगर) में स्थापित युवा कैम्प का नेतृत्व किशनरावजी टेके ने किया था। अपने छोटे भाई चिन्तामणि को जेल भेजा दिया। ज्येष्ठ पुत्र रघुनाथ को खर्डा कैम्प में राशस्त्र प्रतिकर हेतु भूमिगत रखा। उस समय लगभग सौ–डेढ़ सौ युवक कैम्प में रहते थे। निजामी नाके जलाना, पाटिल–कुलकर्णी लोगों के दफ्तरों को आग लगाना आदि अनिष्ट कार्य कर निजामी को आहत पहुँचाना, यह इनका उद्देश्य था। किशनराव टेके उस सयम अपने ग्राम ईट में ही थे। खर्डा गांव आने के लिए उन्हें अनेकों ने आग्रह किया, तब उस निर्भयता के धनी ने स्वाभिमानी के साथ कहा– 'सियारों की भांति छुपकर क्यों बैठे हो? आगे आओ! मृत्यु तो एक दिन आनी होनी ही है, उसे कोई भी टाल नहीं सकता! इस प्रसंग से श्री

शेष पृष्ठ 4 पर

वेद के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज की मान्ताएँ

वेद निर्भ्रम और स्वतः प्रमाण क्यों हैं?

क्योंकि वेद ईश्वर के रचे हुए हैं और ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वविद्या–युक्त, तथा सर्वशक्तिशाली है, इस कारण से उसका कथन भी निर्भ्रम और प्रमाण के योग्य है, और जीवों के बनाये ग्रन्थ स्वतः प्रमाण के योग्य नहीं होते क्योंकि वे (जीव) सर्व–विद्यायुक्त और सर्वशक्तिमान नहीं होते, इसलिए उनका कहना स्वतः प्रमाण के योग्य नहीं हो सकता। ऊपर के कथन से यह बात सिद्ध होती है कि वेद विषय में जहां कहीं प्रमाण की आवश्यकता हो वहां सूर्य और दीपक के समान वेदों का ही प्रमाण लेना उचित है, अर्थात् जैसे सूर्य और दीपक अपने ही प्रकाश से प्रकाशमान होके सब क्रिया वाले द्रव्यों को प्रकाशित कर देते हैं,. वैसे ही वेद भी अपने प्रकाश से प्रकाशित होके अन्य ग्रन्थों को भी प्रकाशित करते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि जो–जो ग्रन्थ वेदों के विरूद्ध हैं वे कभी प्रमाण वा स्वीकार करने योग्य नहीं होते। और वेदों का यदि अन्य ग्रन्थों के साथ विरोध भी हो, तब भी अप्रमाण के योग्य नहीं ठहर सकते, क्योंकि वे तो अपने ही प्रमाण से प्रमाणयुक्त हैं। इसी प्रकार ऐतरेय, शतप–ब्रह्माणादि ग्रन्थ जो वेदों के अर्थ और इतिहासादि से युक्त बनाये गये हैं, वे भी परतःप्रमाण अर्थात् वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण कहे जाते हैं और उनके भिन्न ऐतरेय, शतपथ आदि प्राचीन सत्य–ग्रन्थ हैं, ये परतः पमाण के योग्य हैं।

– ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

मैं ब्राह्मण पुस्तकों को भी वेद नहीं मानता क्योंकि जो ईश्वरोक्त है, वही वेद होता है। जीवोक्त को वेद नहीं कहते। जितने ब्राह्मण ग्रन्थ हैं, वे सब ऋषि–मुनि प्रणीत और संहिता ईश्वर–प्रणीत है। जैसा ईश्वर के सर्वज्ञ होने से तदुक्त निर्भ्रान्त सत्य और मत के साथ स्वीकार करने योग्य होता है, जीवोक्त नहीं हो सकता क्योंकि वे अर्थात जीव सर्वज्ञ नहीं। परतः प्रमाण हैं, इससे जैसे वेद–विरूद्ध ब्राह्मण ग्रन्थों का परित्याग कभी नहीं हो सकता, क्योंकि वेद सर्वथा सबकों माननीय हैं।

–भ्रमोच्छेदन

वेद किनका नाम है?

जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओं से युक्त ऋक् संहितादि चार पुस्तक हैं, जिनसे मनुष्यों को सत्यासत्य का ज्ञान होता है, उनको वेद कहते हैं।

–आर्योद्देश्यरत्नमाला

सृष्टि के आदि में वेदों का ज्ञान किन्हें और कैसे दिया गया?

अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा, इन चारों मनुष्यों को, जैसे कोई वादित्र को बजावें वा काठ की पुतली को चेष्टा करावे, इसी प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्त मान किया था।

वेदों का श्रुति नाम क्यों है?

सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त और ब्रह्मादि से लेकि हम लोग पर्यन्त जिससे सब सत्य विद्याओं को सुनते आते हैं, इससे वेदों का 'श्रुति' नाम पड़ा क्योंकि किसी देहधारी ने वेदों के बनाने वाले को साक्षात् कभी नहीं देखा। इस कारण से जाना गया कि 'वेद' निराकार ईश्वर से ही उत्पन्न हुए और उनको

शेष पृष्ठ 5 पर

पृष्ठ 3 का शेष

ईट के चार आर्य बलिदानी....

किशनरावजी टेके की धैर्यवृत्ति के दर्शन होते थे।

पैनी दृष्टिवाले कार्यकर्ता–

श्री किशनराव टेके दूरदृष्टि वाले कार्यकर्ता थे। उनकी सूक्ष्म विचारप्रणाली का पता अनेकाविध घटनाओं से चलता है। घाटपिंपरी आर्य समाज का सदस्य मैं (लेखक) भी उनका परिममित्र था। वे और हम मिलकर उस समय नवयुकों व नागरिकों में जागृति लाने तथा आर्य समाज के प्रचार का भी काम करते थे। यह बात निजाम पुलिसों को पसंद नहीं आयी। तब मुझे (दत्तात्रय पाटील) खतम करने का उन्होंने निश्चय किया। इस बात का पता जब श्री किशनरावजी को लगा तब तुरन्त ही अपने अन्य साथियों के द्वारा मुझे वहां से सुरक्षित अन्य जग ले जाने की योजना बनाई। इस तरह उन्होंने मुझे प्रयत्नपूर्वक बचा लिया।

किशनरावजी का अमर बलिदान–

श्री किशनरावजी अपने साथियों के साथ निजाम शासक के विरूद्ध संघर्षरत थे। उस समय उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गोदावरी देवी भी महिलाओं में आर्यसमाज का प्रचार–प्रसार करती थी। उनके घर पर 'ओ३म्' का झण्डा लहराता था। कानूनी रूप से "ओ३म्" ध्वज पर प्रतिबन्ध नहीं था। फिर भी द्वेष भावना से उद्विग्न मुसलमान गुंडों, कलेक्टर तथा पुलिस अधिकारियों ने रझाकारों को उकसाया और ओ३म् ध्वज को नीचे उतारने को कहा। तब रझाकार टेके दम्पती के घर आये। उस समय श्री व श्रीमती टेके न ध्वज उतारने के लिए इन्कार किया, तब दोपहर स्वयं कलेक्टर महमद हैदरी, निजामी पुलिस और रझाकारों ने टेके के घर पर आक्रमण किया। दोपहर श्री टेके विश्राम कर रहे थे। इस निद्रावस्था में रझाकारों ने गोलियों से उनको भून डाला और उनकी मृत्यु हुयी।

गोदावरी का बलिदान–

श्रीमती गोदावरी देवी को इन दुष्टों की योजना का पता चला और कलेक्टर की 'गोली चालाओ' इस आवाज को सुनकर उन्होंने भी पिस्तौल चलायी। घमासान संघर्ष में ४ पठाणों के तत्क्षण मृत्यु के घाट उतार दिया। अनेकों रजाकरों, पुलिसों, रोहिलो का प्रतिकार करते–करते दिनांक ६.५.१९४८ को श्री किशनरावजी एवं श्रीमती गोदावरीदेवी जी वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी मृत्यु के उपरान्त ही रजाकारों ने ओ३म् ध्वज को स्पर्श किया और टेके घर को आग लगाई। घर की चिता में ही दिवंगत टेके दम्पती के शव जलकर भस्म हुए। ऐसे क्रान्तिकारी महान दम्पत्ती की बात्माएं अनन्तकाल के लिए ईश्वर सानिध्य में चली गई।

परमात्मा इस क्रान्तिकारी दम्पत्ति की दोनों दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करें। यही प्रार्थना।

हु विश्वनाथ तेली एवं हु. मारुती माली का बलिदान–

किशनरावजी के शिष्य श्री विश्वनाथ तेली एवं मारुती माली ये दोनों आर्य समाज के प्रखर पुरस्कर्ता थे। मृत्युपर्यन्त वे रझाकारों के विरूद्ध लढते रहे तथा जनता मे अन्याय एवं अतयाचारों के विरूद्ध वातावरण तैयार किया। लोगों को निडर बनाकर संघर्ष करने की प्रेरणा दी। गांव–गांव जाकर वहाँ पर ११ युवकों की टोलियां बनायी। रझाकारों तथा निजामी अधिकारियों के विरूद्ध सशस्त्र सेना की स्थापना कर प्रखर आन्दोलन चलाया। उस्मानाबाद का तत्कालीन जिलाधिकारी हैदरी दिनांक ०१ मई १९४८ के दिन ईट में पहुंच गया और यहीं पर रहने लगा। उसी यह इच्छा थी कि ईट ग्राम व परिसर को ध्वस्त किया जाय। इस बात का पता चलते ही विश्वनाथी जी एवं मारुतीराव जी ने अपनी युवक सेना एकत्रित की और डोकेवाडी ग्राम के गन्ने की खेती में छुपकर रहने की योजना बनाई, जिसका एकमात्र उद्देश्य था यहां पर बस्तान जमाये कलेक्टर, डी. एस.पी., फौजदार आदियों को यहां से भगाना, किन्तु समय से पहले ही इस योजना का पता उन्हें लगा। उस समय सभी लोग भोजन कर बैठे ही थे। तब दोनों ओर से आक्रमण हुआ और गोलियों की घमासान बौछार से कुछ घायल हुये। अन्ततोगत्वा इसी में श्री विश्वनाथराव तेली और मारुतीराव माली का बलिदान हुआ।

ईट के इन बलिदानियों का वर्णन तत्कालिन इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर गौरव के साथ अंकित है। धन्य है ईट परिसर की भूमि जिसने इन चार बलिदानियों को जन्म दिया। इन चारों हुतात्माओं को तथा इस पवित्र भूमि को हमारा शत्–शत् वन्दन।

दयानन्दाब्द-195
स्थापना-1886 ई0

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

पंजीकरण-05 जनवरी,1897

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com
(फोन नं0-0522-2286328, मो0नं0--08882230675, 9717476141)

एजेण्डा

सेवा में,

श्री समस्त पदाधिकारीगण
एवं अन्तरंगसदस्य
-----------------------।

पत्रांक-2145-2235/अन्तरंग सभा की बैठक/ लखनऊः दिनांक 15.01.2020

श्रीमन् महोदय,

नमस्ते!

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक 14.03.2020 दिन शनिवार तद्नु चैत्र कृष्ण षष्ठी को पूर्वाह्न 11.00 बजे से संस्था प्रधान-डॉ0 धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में संस्था कार्यालय नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगी, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार एवं निर्णय लिये जायेंगे। आपकी उपस्थिति अतिआवश्यक एवं प्रार्थनीय है।

विषय सूचीः-

1. ईश प्रार्थना।
2. गत अन्तरंग सभा की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
3. गत आय-व्यय लेखा-जोखा के विवरण की पुष्टि।
4. नवीन आर्य समाजों की प्रविष्टि/निरस्तीकरण पर विचार।
5. आर्य मित्र साप्ताहिक, उपदेश विभाग, विद्यार्य सभा आदि की समीक्षा।
6. आर्य समाजों में नियुक्त प्रशासकों के कार्यकाल बढ़ाने एवं प्रशासक बदलने पर विचार।
7. आर्य समाज गणेशगंज, सिविल लाईन्स नरही, लखनऊ, वजीरगंज, गोण्डा व अन्य आर्य समाजों पर प्रधान जी द्वारा लिये निर्णयों पर विचार।
8. सर्वश्री मनमोहन तिवारी के उप प्रधान, अजय श्रीवास्तव के सहयुक्त सदस्य, नवीनचन्द्र आर्य, अन्तरंग सदस्य के पदों पर बने रहने पर विचार।
9. विभिन्न आर्य समाजों की शिकायतों/जाँच आख्याओं पर विचार।
10. आर्य समाज एवं आर्यवीर दल के प्रचार-प्रसार पर विचार
11. आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ की पंजीकृत नियमावली के नियम-10 (1-9) एवं 58 पर विचार।
12. महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़तल्ला, नैनीताल का शताब्दी समारोह आयोजन की तिथि नियत करने पर विचार।
13. अन्य विषय मा0 प्रधान जी की आज्ञा से।
14. दिवंगत आत्माओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि।

(ज्ञानेन्द्रसिंह आर्य)
मन्त्री

संस्थापित–1885
श्रीमद्दयानन्दाब्द–195

ओ३म
कृण्वन्तों विश्वमार्यम्

फोन नं0–0522–2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

का

136–वॉं, वार्षिक बृहद् अधिवेशन

पत्रांक– 2236 / वार्षिक बृहद् अधिवेशन / लखनऊ दिनांक 15 / 01 / 2020

सेवा में,

सम्माननीय सभा पदाधिकारीगण, अन्तरंग सदस्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तरंग सदस्य, सभी आर्य समाजों, जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माननीय प्रतिनिधिगण।

महोदय नमस्ते,

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक 15 मार्च, 2020 दिन रविवार (चैत्र कृष्ण सप्तमी) को प्रातः 11.00 बजे से प्रधान, डॉ0 धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, (नारायण स्वामी भवन) 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ परिसर में सम्पन्न होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि नियत तिथि, समय व स्थान पर पहुँचकर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

विषय सूची

1– उपस्थिति।
2– ईश प्रार्थना।
3– गत साधारण सभा की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
4– प्रधान व सभा मन्त्री द्वारा प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
5– वार्षिक वृत्तांत 1 अप्रैल, 2018 से 31 मार्च,2019 तक पर विचार व स्वीकारार्थ।
6– 01 अप्रैल, 2019 से 31 दिसम्बर, 2019 तक आय–व्यय स्वीकारार्थ।
7– आगामी वर्ष 2020–2021 का अनुमानित बजट (आय–व्यय) स्वीकारार्थ।
8– आय–व्यय लेखा परीक्षक की नियुक्ति पर विचार।
9– संस्था प्रधान अथवा अन्तरंग सभा द्वारा भेजे गए विषय / प्रस्ताव पर विचार।
10– अन्य विषय प्रधान जी की अनुमति से।
11– दिवंगत आर्य बन्धुओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि प्रस्ताव।

(ज्ञानेन्द्रसिंह आर्य)
मन्त्री
मो0नं0–08882230675,
9717476141

पृष्ठ 4 का शेष

वेद के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द ....

सुनते–सुनाते ही आज पर्यन्त सब लोग चले आते हैं। –ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

वेदों का ज्ञान नित्य है

जैसे इस कल्प की सृष्टि मे शब्द, अक्षर, अर्थ और सम्बन्ध वेदों में हैं, इसी प्रकार से पूर्व–कल्प में थे और आगे भी होगें, क्योंकि ईश्वर की जो विद्या है सो नित्य एक ही रस बनी रहती हे, उकने एक अक्षर का भी विपरीत भाव कभी नहीं होता। सो ऋग्वेद से लेके चारों वेदों की संहता अब जिस प्रकार की हैं कि इनमें शब्द, अर्थ, सम्बन्ध, पद, और अक्षरों का जिस क्रम से वर्तमान है इसी प्रकार का क्रम सब दिन बना रहता है, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान नित्य है, उनकी वृद्धि, क्षय और विपरीतता कभी नहीं होती, इस कारण से वेदों को नित्य स्वरूप ही मानना चाहिए।– ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

क्या वेदों में इतिहास है?

ब्राह्मण पुस्तकों में बहुत से ऋषि–महर्षि और राजादि के इतिहास लिखे हैं, और इतिहास जिसका हो, उसके जन्म के पश्चात् लिखा जाता है। वह ग्रन्थ भी उसके जन्म के पश्चात् होता है। वेदों में किसी का इतिहास नहीं किन्तु विशेष जिस–जिस शब्द से विद्या का बोध होवे, उस–उस शब्द का प्रयोग किया है, किसी मनुष्य की संज्ञा वा विशेष कथा का प्रसंग वेदों में नहीं। –सत्यार्थ प्रकाश (सप्तम सुम०)

प्रत्येक मन्त्र के साथ ऋषि किसलिए लिखा होता है?

ईश्वर जिस समय आदि सृष्टि में वेदों का प्रचार कर चुका, तभी से प्राचीन ऋषि लोग वेद–मन्त्रों के अर्थो का प्रचार करने लगे। फिर उनमें से जिस–जिस मन्त्र का अर्थ जिस–जिस ऋषि ने प्रकाशित किया, उस–उस का नाम उसी–उसी मन्त्र के साथ स्मरण के लिए लिखा गया है, इसी कारण से उनका ऋषि नाम भी हुआ है और जो उन्होंने ईश्वर के ध्यान और अनुग्रह से बड़े–बड़े प्रयत्न के साथ वेद–मन्त्रों के अर्थो को यथावत् जानकर सब मनुष्यों के लिए पूर्ण उपकार किया है, इसलिए विद्वान् लोग वेद–मन्त्रों के साथ उनका स्मरण रखाते हैं। –ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

जिस–जिस मन्त्रार्थ का दशन जिस ऋषि को हुआ और प्रथम ही जिसके पहले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था, किया और दूसरों को पढ़ाया भी, इसलिए अद्यावधि उस–उस मन्त्र के साथ ऋषि का नाम स्मरणार्थ लिखा जाता है। जो कोई ऋषियों को मन्त्रकर्ता बतलावे, उनको मिथ्यावादी समझे, वे तो मन्त्रों के अर्थ–प्रकाशक हैं। सत्यार्थप्रकाश

ऋषि लोगों को वेदों के अर्थ किसने और कैसे बताए?

परमेश्वर ने जनाया और धर्मात्मा योगी महर्षि जब–जब जिस–जिस के अर्थ जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो कर परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए, तब–तब परमात्मा ने सभी इष्ट मन्त्रों के अर्थ बताये। जब बहुतों के आत्माओं में वेदार्थ–प्रकाश हुआ, तब ऋषि–मुनियों ने इतिहासपूर्वक ग्रन्थ बनाये, उसका नाम 'ब्राह्मण' अर्थात् –सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास

ऋषियों ने वेद–मंत्रों का प्रकाश क्यों किया?

वेद–प्रचार की परम्परा स्थिर रखने के लिए तथा जो लोग वेद–शास्त्रादि पढ़ने को कम समर्थ थे वे जिससे सुगमता से वेदार्थ जान लेवें, इसलिए निघण्टु और निरूक्त आदि ग्रन्थ भी बना दिए हैं कि जिनके सहाय से सब मनुष्य वेद और वेदागों को ज्ञानपूर्व पढ़कर उनके सत्य अर्थों का प्रकाश करें। –ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

वेद संस्कृत भाषा में क्यों प्रकाशित किये गये?

जो किसी देश–भाषा में प्रकाशित करता, तो ईश्वर पक्षपाती हो जाता क्योंकि जिस देश की भाषा में प्रकाशित करता, उनको सुगमता और विदेशियों की कठिनता वेदों को पढ़ने–पढ़ानें की होती। इसलिए संस्कृत ही में प्रकाश किया, जो किसी देश की भाषा नहीं और वेद–भाषा अन्य सब भाषाओं के कारण है, उसी में वेदों का प्रकाश किया।

–सत्यार्थ प्रकाश

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

श्रीमद्दयानन्दाब्द–195 फोन नं0–0522–2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

का

136वॉ, वार्षिक बृहद् अधिवेशन

दिनांक–१४, १५ मार्च, २०२० तद्नुसार दिन शनिवार एवं रविवार

(तिथि–चैत्र कृष्ण षष्ठी एवं सप्तमीं) सम्वत्–२०७६)

अधिवेशन स्थल- सभा भवन प्रांगण-5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

समस्त पदाधिकारी/अन्तरंग सदस्य/प्रतिनिधि/आर्य बन्धुओं/बहिनों,

निवेदन के साथ सूचित करना है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का दो–दिवसीय अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन एवं वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक १४, १५ मार्च, २०२० तद्नुसार दिन शनिवार एवं रविवार को सभा प्रांगण में प्रातः ०८.०० बजे से सायं ०६.०० बजे तक संस्था प्रधान–डॉ० धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों/जिला सभाओं/शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेजे जा चुके हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त स्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः–

(क) आर्य समाज के सभासद/सदस्यों का रू० ५/– प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिंसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।

(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः– दुकानों/भवनों/अतिथि गृहों/ विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश ।

(ग) सूदकोटि के रूप में रू० २५/–

(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य/सभासद रू० २/– वार्षिक

(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू० २५/– इसमें किसी भी समाज के पहले ११ सदस्य पर १, ३१ सदस्य पर २ एवं प्रत्येक अगले २० सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।

(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू० १००/– अथवा आजीवन शुल्क के रूप में १०००/– के हिंसाब से।

(ज) जिला आर्य प्रतिनिधि सभाएं रू० १००/– दशांश एक मुश्त तथा रू० १००/– आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू० २५/– भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।

(झ) प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम ११ समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में दिनांक–१५ फरवरी, २०२० तक अवश्य जमा करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। बैंक ड्राफ्ट, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें। जिन समाजों को वाषिक चित्र प्राप्त न हो, वे समाजें सभा के उपरोक्त फोन नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं।

सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक/प्रतिनिधियों के ठहरने एवं भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया रास्ते के लिए ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ रखें।

इस द्विदिवसीय अधिवेशन का संक्षिप्त कार्यकम निम्न प्रकार है:–

दिनांक 14-03-2020 दिन शनिवार

प्रथम सत्र

प्रातःकाल	८.०० बजे	– राष्ट्रभृत यज्ञ (सभा की भव्य यज्ञशाला में) भजन एवं प्रवचन।
प्रातःकाल	१०.०० बजे	– ध्वजारोहण– माननीय सभा प्रधान जी द्वारा।
प्रातःकाल	११.०० बजे	– प्रदेशीय अन्तरंग सभा की बैठक।
१ बजे से भोजनावकाश		

द्वितीय सत्र

अपराह्न ०२.०० बजे से		– आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ।
सायंकाल ६.०० बजे		– सामूहिक संध्या।
रात्रिकाल ७.०० से ६.००		– सामाजिक कुरीतियॉ, भ्रष्टाचार निवारण सम्मेल(मद्यनिषेध/नशाबंदी/दहेज उन्मूलन आदि विषयों पर)
रात्रि ६.०० बजे		– शान्ति पाठ के उपरान्त प्रथम दिन का सम्मेलन समाप्त।

द्वितीय दिवस दिनांक 15-03-2020 (रविवार)

तृतीय सत्र

प्रातःकाल ८.०० से ६.०० बजे तक		– राष्ट्रभृत यज्ञ, भजन एवं उपदेश आदि।
पूर्वाह्न ११.०० बजे से		– साधारण सभा की बैठक प्रारम्भ।
	,,	– माननीय सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री का प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
	,,	– वार्षिक वृत्तांत एवं आय–व्यय का लेखा प्रस्तुत।
	,,	– अनुमानित आय–व्यय का लेखा स्वीकारार्थ प्रस्तुत तथा अन्य आवश्यक विषय।
दोपहर १.०० बजे		– भोजन अवकाश

चतुर्थ सत्र

प्रातःकाल ०१.०० बजे से		– राष्ट्र रक्षा सम्मेलन
अपराह्न २.०० बजे से		– आर्य समाज संगठन, महिला उत्थान एवं युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन।
सायं ४.०० बजे		– धन्यवाद, शान्ति पाठ तथा अधिवेशन के समापन की घोषणा।

(डॉ0 धीरज सिंह आर्य)
प्रधान

(अरविन्द कुमार)
कोषाध्यक्ष

(ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य)
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ

प्रेरक कहानी

कहानी प्रभु दर्शन

–प्रवीण कुमार आर्य

पास के आर्य समाज मन्दिर में एक पहुंचे हुए महात्मा आए हुए थे। हर रोज शाम को उनका प्रवचन होता था। जब ओमपाल व उसकी धर्मपत्नी को पता चला तो एक दिन खाना खाकर बच्चों समेत सत्संग में जाने लगे। ओमपाल के वृद्ध पिता ने उन्हें जाते हुए देखकर पूछा– 'कहाँ जा रहे हो बेटा?' ओमपाल ने रुखाई से कहा–'सत्संग में'। 'बेटा मुझे भी साथ ले चलते। मैं भी कुछ सुन लेता।' पता ने दीनता भरे स्वर में कहा। ओमपाल गुस्से से बोला–'आंखों कानों से दीखता सुनता नहीं। पैरों में चलने की ताकत नहीं, फिर भी इन्हें साथ ले चलो। हम वहाँ तुम्हें संभालेंगे या सत्संग सुनें।'

इतना कुछ सुनने के बाद वृद्ध पिता की आगे, बोलने की हिम्मत नहीं हुई। ओमपाल सत्संग सुनने चले गए। परन्तु भूल गए कि पिता को खाना नहीं दिया है। जाकर आराम से बैठ गए। महात्मा जी के प्रवचन का विषय था– परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो?' वे कह रहे थे–

'उस जगपालक परमपिता परमेश्वर को पाना ही मानव जीवन का उद्देश्य है। परन्तु प्रभु दर्शन की इच्छा रखने से पहले यह मत भूलों कि उस सृष्टिकर्त्ता के अतिरिक्त वे देवी और देवता भी पूज्य हैं जिनकी कृपा से हम आज यहाँ पर सत्संग कर रहे हैं। सबसे पहले उस देवी स्वरूपा माता और देवतास्वरूप पिता की सेवा करो, उनको खुश रखो। उनकी आँखें बनो। उनके पंख बनकर खुले आकाश में विचरण कराओ। उनको भूखा रखकर भगवान का भोग लगाने से तुम्हें परमात्मा मिल जाएगा, यह तुम्हारी भूल है। सबसे पहले उन्हें खुश करने का प्रयत्न करो अगर तुम्हारे माता पिता ही खुश नहीं हुए तो वह परमपिता कैसे खुश रह सकता है।'

ओमपाल ने इतना ही सुना और पत्नी व बच्चों समेत उठकर जाने लगा। उन्हें जाते देखकर महात्मा जी बोले –'बेटा अभी कहाँ चले?' ओमपाल सिर झुकार बोला–क्षमा कीजिये स्वामीजी, हम भूल गए थे कि तैरना न आता हो तो गहरे पानी में नहीं उतरना चाहिए। हम जिस ज्योति को जगाना चाहते हैं, उसमें न सेवा रूपी तेल है न प्रेम रूपी बाती। अभी तो पितृदर्शन ही नहीं हुआ प्रभु दर्शन कैसे होगा? पहले माता–पिता के चरणों में स्थान पा लें, फिर उस परम पिता के चरणों में भी नतमस्तक होंगे।'

यह कहकर वे जाने लगे, आत्म दर्शन का मार्ग प्रशस्त करने और स्वामी जी मुस्कुराते हुए फिर आनन्द वर्षा करने लगे।

सिद्धान्त खण्ड

मूर्ति-पूजा

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः।
हिरण्यगर्भ इत्येष मा मा हि ँ सीदित्येषा
यस्मान्न जात इत्येषः॥ (यजु० ३२। ३)

शब्दार्थ—(यस्य) जिसका (नाम) प्रसिद्ध (महत् यशः) बड़ा यश है (तस्य) उस परमात्मा की (प्रतिमा) मूर्ति, प्रतिकृति, प्रतिनिधि, मापक, परिमाण (न अस्ति) नहीं है (एषः हिरण्यगर्भः इति) सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों को अपने भीतर धारण करने से वह हिरण्यगर्भ है। (मा मा हिंसीत् इति एषा) 'मेरी हिंसा मत कर' ऐसी प्रार्थना उसीसे की जाती है (यस्मात् न जातः इति एषः) 'जिससे बढ़कर कोई उत्पन्न नहीं हुआ' ऐसा' जो प्रसिद्ध है—उस परमात्मा की कोई मूर्ति नहीं है।

भावार्थ—ईश्वर का सामर्थ्य महान् व उसका यश भी महान् है।
'हिरण्यगर्भः' यजु० २५। १०-१३ में जिसका वर्णन है।
'यस्मान्न जातः' यजु० ८। ३६ में जिसका गुण-गान है।
'मा मा हिंसीत्' यजु० १२। १०२ में जिसका चित्रण है।

वह प्रभु बहुत महान् है। वह संसार के सभी चमकीले पदार्थों को अपने गर्भ में धारण कर रहा है। संसार में उस जैसा कोई न आज तक उत्पन्न हुआ है और न भविष्य में होगा।

विपत्ति और कष्टों में मनुष्य उसी परमात्मा को पुकारते हैं। ऐसे गुणागार, कृपासिन्धु, महान् एवं व्यापक परमात्मा की कोई मूर्ति नहीं है। जब परमात्मा की कोई मूर्ति नहीं है तब मूर्तिपूजा अवैदिक है। भागवत १०। ८४। १३ के अनुसार मूर्तिपूजक 'गोखर' गौओं का चारा ढोनेवाला गधा है।

प्रकाश वीर शास्त्री मेमोरियल लेक्चर 2019

दिसम्बर २०१६ को नई दिल्ली, लोधी रोड पर स्थित इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर में आर्य नेता पंडित प्रकाशवीर शास्त्री जी के ६६वें जन्मदिवस पर स्मृति व्याख्यान का भव्य आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के विषयों पर आधारित इस व्याख्यान माला का विषय था जम्बू कश्मीर एवं अनुच्छेद ३७० चूंकि प्रकाशवीर जी ने कश्मीर विषय के लिए संसद के अंदर एवं बाहर पुरजोर आवाज़ उठाई थी और ११ सितम्बर १६६४ को इस अनुच्छेद को समाप्त करने का प्रथम प्राइवेट मेंबर बिल प्रस्तुत किया था इसलिए इसका विषय जम्मू–कश्मीर एवं अनुच्छे ३७० चयनित किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत दीपश्खिा प्रज्वलन से हुई, जिसके पश्चार्त राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् गया गया। उसके पश्चात शास्त्री जी के जीवन पर एक फिल्म दिखायी गई। जिसमें शास्त्री जी के जन्म, हैदराबाद सत्यग्रह, पंजाब हिंदी आंदोलन, संसद में कार्य का वर्णन था। उसमें देश के राजनेताओं की श्रद्धांजलि थी और विशेषकर श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी का वीडियों श्रद्धांजलि भी थी।

कार्यक्रम में डा. सत्यपाल सिंह जी सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री मुख्य अतिथि एवं डा सुधांशु त्रिवेदी, सांसद एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता भाजपा विशिष्ट अतिथि थे। श्री सुशील पंडित कश्मीर विषयों के जानकार एवं डा. सुभाष कश्यप संविधान विशेषज्ञों के जानकारी मुख्य वक्ता थे।

पंडित प्रकाशवीर शास्त्री मेमोरियल ट्रस्ट के संस्थापक श्री शरद त्यागी ने उद्घाटन भाषण में शास्त्री जी के विचारों और कश्मीर पर व्यक्त किये शास्त्री जी के विचारों को लोगों के साथ साझा किया। श्री शरद त्यागी ने कश्मीर के ऐतिहासिक तथ्यों को भी लोगों के सामने प्रस्तुत किया, और शास्त्री जी द्वारा ११ सितम्बर १६६४ को लोकसभा में अनुच्छेद, ३७० को हटाने की मांग करते हुए व्यक्त किये गए विचारों को भी प्रस्तुत किया।

उद्घाटन भाषण में श्री शरद त्यागी ने यह भी बताया के कैसे प्रकाशवीर जी ने ०६ दिम्बर १६६५ को पाकिस्तान में हिन्दुओं और अन्य गैर मुसलमानों के साथ हो रहे अमानवीय व्यवहार पर चर्चा की थी और सरकार से उसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उठाने की मांग की थी। श्री शद त्यागी ने वर्तमान सरकार द्वारा नागरिकता संशोधन कानून लाने के फैसले का स्वागत करते हुए इसे बहुत ज़ख्मों पर मरहम की तरह बताया और लोगों को भ्रांतियों से बचाने के लिए चेताया।

श्री सुशील पंडित जी ने कश्मीर में हिन्दुओं के साथ हुए अत्याचार और नरसंहार के इतिहास का वर्णन किया। श्री सुशील पंडित ने बताया कि कैसे कश्मीर की सरकारों ने अपने मन मुताबिक भारतीय संविधान को चुनिंदा रूप से कश्मीर में लागू किया। उन्होंने बताया कि कश्मीर की सरकार ने राज्य में ६६ प्रतिशत मुसलमान आबादी होते हुए भारतीय संविधान में मुसलमानों को अल्प संख्यक के दर्जे को तो अपना लिया पर बाकी बातों को नहीं अपनाया औ। इस सबका मूल कारण था भारत सरकार की राजनैतिक इच्दा शक्ति की कमी और अनुच्छेद ३७०।

श्री सुशील पंडित ने अंत में कहा कि उस समय में जब जानकारियां हासिल करना इतना आसान नहीं था तब प्रकाशवीर शास्त्री जी ने इतने तथ्य अपने वक्तव्य में दिय और बेबाकी से अपनी राष्ट्र हित की बातों को लोकसभा में प्रस्तुत किया वह अत्यंत सराहनीय था।

इसके पश्चात डॉ० सुधांशु त्रिवेदी ने अपने व्याख्यान में बातया कि कैसे भारतीय संस्कृति की महानता को हमेशा कम करके हमे बताया गया और कैसे पश्चिमी संस्कृति को ही सही बताया गया।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

महत्वपूर्ण सन्देश

नतमस्तक सब आर्यजन, करते तुम्हें प्रणाम, अजर अमर हैं विश्व में दयानन्द का नाम।
दयानन्द का नाम, महर्षि पदवी पाई, भूले भटके जन–गन–मन को राह दिखाई।
गोरे भारत नहीं छोड़ते, राजी–राजी, अगर न देते योग देश के आर्य समाजी। –काकाहाथरसी

१. महर्षि दयानन्द एक ऐसे प्रकाश स्तम्भ हैं जिन्होंने असंख्य मनुष्यों को सत्य का मार्ग बतलाया है। उनके देश तथा देश की जनता पर किये गये उपकार सदैव अमर रहेंगे। महप्रि वर्तमान अन्धकार युग के लिए वैदिक सूर्य थे। मैं अपने को उनका अनुयायी कहलाने में गर्व करता हूँ। – **देवता स्वरूप भाई परमानन्द।** २. मैं ऋषि दयानन्द को राजनैतिक गुरू मानता हूँ मेरी दृष्टि में वे महान नेता और राष्ट्र विधायक थे। –**विट्ठल भा पटेल**

३. महर्षि जी का लिखा अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' हिन्दू जाति की रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला ग्रन्थ है। 'सत्यार्थ प्रकाश' की विधमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नही बघार सकता। –**वीर सावरकर** ४. ऋषि ने अपने देशवासियों तथा समस्त विश्व को 'सत्यार्थ प्रकाश' के रूप में जो अमर वसीयत दी है वह उनकी प्रकाण्ड प्रतिभा का प्रतीक है। इस ग्रन्थ में वह हमारे सम्मुख एक उत्पादक, कलाकार, समीक्षक तथा निर्माता के रूप में प्रकट हुए हैं। – **डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी**

ऋग्वेद पारायण यज्ञ

05 जनवरी से 14 जनवरी तक सम्पन्न हुआ

श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य
महामंत्री : आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र०
प्रधान : जिला आर्य प्रतिनिधि सभा गा०बाद

आर्य बन्धु परिवार
के मुखिया
श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य जी को
''आर्य-प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश'' द्वारा महामंत्री नियुक्त किये जाने के उपलक्ष में
''ऋग्वेद पारायण महायज्ञ''
के आयोजन पर आर्य बन्धु परिवार की सप्रेम भेंट

श्रीमति कमला आर्या

हमारे उपकर्म

आर्य बन्धु ट्रेडर्स

04, पंचशील कालोनी (कोयल एन्कलेव के सामने) लोनी रोड़, भौपुरा, गाजियाबाद (उ०प्र०)

आर्य बन्धु पब्लिक स्कूल (ABPS)

(नर्सरी से कक्षा 12 तक CBSE)
ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेस वे, गांव सादत नगर इकला, वेव सिटी, गाजियाबाद

शुद्धस्वदेशी ऑनलाईन प्राईवेट लिमिटेड
SHUDDHSWADESHI.IN

आपसे प्रार्थना है कि इस महायज्ञ में सम्मिलित होकर हमे कृतार्थ कर धर्म लाभ उठाये।

श्री नबाब सिंह भाटी श्री ओमेन्द आर्य श्री देवेन्द्र आर्य श्री सतेन्द्र आर्य

कृतघ्नता महापाप है

लोग किए हुए उपकार को भूल जाते है जबकि किया हुआ उपकार मानना कृतज्ञता है और न मानना कृतघ्नता है। बालि की मृत्यु के बाद विभीषण सुग्रीव का राज्य तिलक होने पर जब वह राज मद में यह भूल गया कि सीता की खोज करने के लिए जो वचन राम को दिया था उसका भी समय निकल चुका है फिर भी बिना परवाह किये राजमद में डूबा पड़ा तब राम के कहने पर लक्ष्मण जाकर सुग्रीव को उपदेश करते हैं–

अर्थिनामुपपन्नानां पूर्वं चाप्युकारिणां।
आशां संश्रुत्य यो हन्ति स लोके पुरूषा धमः।।

जो बल और पराक्रम से सम्पन्न होने पर भी उपकार करने वाले को आशा देकर और उनका कार्य करने की प्रतिज्ञा को भंग कर देते हैं वह संसार में सबसे नीच पुरूष है।

समस्त आर्य समाजों/जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं को आवश्यक सूचना एवं निर्देश

संस्था प्रधान जी के निर्देशानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र, नारायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में कार्यरत आर्य समाजों एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान/मन्त्री/ कोषाध्यक्ष को सूचित किया जाता है, कि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रदेश में कार्यरत् सभी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं को बावत वर्ष–२०२० एवं वित्तीय वर्ष–२०१८–१६ हेतु वार्षिक चित्र प्रेषित किये जा रहे हैं। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से अपेक्षा है, कि वे अपनी–अपनी आर्य समाजों का वार्षिक विवरण भरकर संस्था कार्यालय में दिनांक १५ फरवरी २०२० तक वार्षिक चित्र (वार्षिक विवरण) एवं दशांश जमा करके रसीद प्राप्त कर लें तथा निम्न अभिलेख सभा कार्यालय में उपलब्ध करा दें।

स्वामी– आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस,
5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप से शारदा प्रिंटिग प्रेस, माडल हाउस लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक/मुद्रक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।